उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः 629/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 11–07–2025

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 11 जुलाई, 2025 को वर्ष 2025–26 की सम्पन्न दसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की दसवीं बैठक, डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 11 जुलाई, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक तथा मौसम वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम एवं कीट वैज्ञानिक; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; सी.ए.एफ.आर.आई., झांसी के वैज्ञानिकों; उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, लखनऊ; रेशम विभाग; पशुपालन विभाग तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (11–17 जुलाई, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से कम रहने की संभावना है। इस सप्ताह के आरंभिक चरण में (11–12 जुलाई, 2025) प्रदेश के दक्षिणी भाग में कहीं–कहीं बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है तथा इसके 2–3 दिनों के बाद प्रदेश के पश्चिमी एवं तराई क्षेत्रों में भारी वर्षा होने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तर–पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से (2 से 4 डिग्री से.) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य या सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 31 से 34 डिग्री से. उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 34 से 36 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तर–पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से (1 से 3 डिग्री से.) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस–पास रहने की संभावनाहै।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से., भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग तथा पश्चिमी मैदानी, मध्य पश्चिमी मैदानी, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री से. रहने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 11 जुलाई, 2025) के दौरान उत्तर प्रदेश में 186.5 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष कुल 179.8 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 4 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 199.3 मिमी. सामान्य के सापेक्ष 20 प्रतिशत कम कुल 159.6 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 152.4 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 48 प्रतिशत अधिक कुल 225 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

कृषि विभाग से दिनांक 07 जुलाई, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 46.93 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 44.25 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.33 लाख हे. के सापेक्ष 4.33 लाख हे. में डाली जा

चुकी है जो लक्ष्य का 99.93 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 30.95 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 47.63 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 4.50 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01 लाख हे. के सापेक्ष 1.66 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.284 लाख हे. के सापेक्ष 2.50 लाख हे. की बुवाई, तिल फसल लक्ष्य 4.38 लाख हे. के सापेक्ष 2.10 लाख हे. एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 1.38 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है। मूंगफली की फसल लक्ष्य 3.70 के सापेक्ष 1.04 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है एवं उर्द के लक्ष्य 4.83 सापेक्ष 0.55 तथा मूंग के लक्ष्य 0.47 के सापेक्ष 0. 19 की बुवाई की जा चुकी है। सोयाबीन के लक्ष्य 0.35 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.24 की बुवाई की जा चुकी है।

बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- प्रदेश सरकार की प्राथमिकता अनुरूप वृक्षारोपण अभियान 2025 के अन्तर्गत समस्त वृक्षारोपण, (विशिष्ट वन स्थापना एवं महत्वपूर्ण दिवसों पर वृक्षारोपण सहित) पर्यावरण की सुरक्षा हेतु '' एक पेड़ मां के नाम'' थीम के अन्तर्गत वृक्षारोपण करें।
- वृक्षारोपण में पीपल, पांकड़, बरगद, नीम, जामुन, इमली, बेल, अर्जुन, शहजन, आम, महुआ, आंवला आदि प्रजातियों सहित छायादार/फलदार/औषधि व पर्यावरणीय महत्व की प्रजातियों को प्रमुखता से शामिल करें। फलदार प्रजाति के पौधों की व देशी प्रजाति के रोपण को प्राथमिकता दें। यह पौध अपने जनपद के वन विभाग कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
- कृषि विभाग के अन्तर्गत प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से अनुदान व सहयोग प्राप्त कर रहे समस्त पंजीकृत कृषकों द्वारा एक पौधे का रोपण अनिवार्य रूप से किया जाय। कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं कृषि विश्वविद्यालय परिसरों में रिक्त पड़ी भूमि को पौधा रोपण से संतृप्त किया जाय।
- धान की तैयार पौध की रोपाई पर्याप्त नमी की अवस्था में युद्धस्तर पर करें। धान की 20–25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 40–50 हिल तथा 2–3 पौधा प्रति हिल 3–4 सेमी. की गहराई तक करें।
- नर्सरी की पौध रोपाई से पूर्व धान की जड़ों को ट्राइकोडर्मा से शोधित कर रोपाई करें।
- धान की रोपाई के बाद जो पौधे मर गये हो उनके स्थान पर तीन से पॉच दिन के अन्दर दूसरे पौधों को तुरन्त लगा दें ताकि प्रति इकाई पौध सुनिश्चित की जा सके।
- रोपाई किये गये धान में 15 से 21 दिन पर प्रथम बार यूरिया की टापड्रेसिंग करें।
- मानसूनकाल में गन्ने में मिलीबग कीट का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 150 से 200 मि.ली. को 625 ली. पानी में घोल बनाकर गन्ने की पत्ती एवं पत्रकंचुक पर छिड़काव करें।
- जिन क्षेत्रों में सामान्य से कम वर्षा हुई है उन क्षेत्रों में कृषक दलहनी, तिलहनी व श्रीअन्न फसलों की बुवाई प्राथमिकता के आधार पर करें।
- दलहनी व तिलहनी फसलों का बीज यदि उपचारित नहीं है तो संस्तुति अनुसार उपचारित कर फसल के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से अवश्य उपचारित करें।
- मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, कोदों आदि की बुवाई का उचित समय है। बुवाई के पूर्व बीज शोधन हेतु बायोफारमुलेशन ट्राइकोडर्मा 4 से 6 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करें।
- आम, अमरूद, लीची, आंवला, कटहल, नींबू, जामुन, बेर, केला, पपीता आदि के नवीन बाग संस्तुत दूरी पर लगायें।
- बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल होती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय।
- पशु के शरीर में व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करें।
- मौसम खराब रहने यानि अत्यधिक आद्रता, वर्षा रहने पर मत्स्य आहार का प्रयोग आधा कर दें।

धान की खेती

- स्री पद्धति से 1 हे. धान की रोपाई हेतु मात्र 1000 वर्ग फुट क्षेत्रफल की पौध पर्याप्त है तथा नर्सरी की क्यारियॉ 4–5 इंच ऊॅची हों। स्री पद्धति के लिये 6 किग्रा. प्रति हे. की दर से बीज की नर्सरी में बुआई करें। स्री पद्धति की नर्सरी में जहॉ तक संभव हो देशी खाद का ही प्रयोग करें तथा 8–12 दिन वाली पौध की रोपाई करें।
- कृषक भाईयों ने यदि अभी तक धान की सीधी बुवाई नहीं किया है तो धान की कम अवधि (110 से 125 दिन) की उन्नत किस्मों सी.ओ.–51, नरेन्द्र–80, आई.आर.–50, नरेन्द्र–97, पंत धान–12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान–2, मालवीय धान–917, शियाट्स धान–5 की सीधी बुवाई करें।
- ऊसर भूमि में रोपाई हेतु 30 से 35 दिन की पौध का प्रयोग करें तथा एक स्थान पर दो से तीन पौध लगायें तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 से.मी. रखे।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3–4 लीटर अथवा अथवा विशेषतया सीधी बुवाई वाले खेतों में प्रेटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई. सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 1–2 दिन के अन्दर छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- अरहर की देर से पकने वाली उन्नतशील किस्मों यथा नरेन्द्र अरहर 2, मालवीय चमत्कार, राजेन्द्र अरहर–2, मालवीय विकास, पूसा 9, आजाद, नरेन्द्र अरहर 1, अमर, बहार, आई.पी.ए.–206, पूसा अरहर 151 तथा आई.पी.ए.–15–2 की बुवाई मेढ़ों पर करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम या एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

उर्द की खेती

- उर्द की शीघ्र पकने वाली किस्मों (70 से 80 दिन) यथा पंत यू–35, नरेन्द्र उर्द–1, पंत उर्द–31, आई.पी. यू.–2–43, आई.पी.यू.–13–1 तथा आजाद उर्द–1 की बुवाई करें।

मूंग की खेती

- मूंग की किस्मों यथा आजाद मूंग–1, पूसा–1431, मेहा 99–125, एम.एच.–2.15, टी.एम.–9937, मालवीय, जनकल्याणी, मालवीय, जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, मालवीय ज्योति, पंत मूंग 4, नरेन्द्र मूंग–1, पी.डी.एम.–11, आशा की बुआई करें।

श्री अन्न की खेती

- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.–13, सी.एस.वी.–15, एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–16, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14, सी.एस.एच.–18, सी.एस.एच. –13 व सी.एस.एच.–23 की बुवाई करें।
- सावां की प्रजाति टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, डी.एच.बी.एम. –93–3, डी.एच.बी.एम.–33–3 की बुआई करें।
- कोदों की प्रजाति जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जे.पी.वी.के.–3 की बुआई करें।
- बाजरा की उन्नतशील संकुल किस्मों यथा धनशक्ति, आई.सी.एम.बी.–155, डब्लू.सी.सी.–75, न.दे.पफ.बी.–3 (नरेन्द्र चारा बाजरा–3), राज–171 तथा संकुल किस्मों 86 एम. 84, आई.सी.एम.एच.–451, पूसा–322 तथा पूसा–23 की बुवाई करें।

मक्का की खेती

- मध्यम अवधि की संकर प्रजातियों यथा–दकन–107, मालवीय संकर मक्का–2, प्रो–303 (3461), के.एच. –9451, के.एच.–510, एम.एम.एच.–69, बायो–9637, बायो–9682 एवं संकुल प्रजातियों नवजोत, पूसा कम्पोजिट–2, श्वेता सफेद, नवीन की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- पूर्व में बोए गए मक्के की निराई तथा विरलीकरण के बाद नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा का एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें तथा मक्के में जल निकासी की व्यवस्था करें।

- मक्के में घुटने के बराबर (30–35 दिन पर) पौधों की ऊंचाई हो जाने पर 75 कि.ग्रा./हे. यूरिया की टापड्रेसिंग करें।
- मक्का में खरपतवार नियंत्रण के लिए एट्राजीन 2 किग्रा./हे. की दर से बुआई के 2 दिन के अन्दर प्रयोग करें। यदि मक्के के बाद आलू की फसल ली जानी है तो एट्राजीन के स्थान पर लासो 50 ई.सी. 5 ली. / हे. की दर से प्रयोग करें।

<u>सोयाबीन की खेती</u>

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी.एस. 1024, पूसा–16, पी.एस.1042, जे.एस. 20–34, जे.एस. 20–98, पंत सोयाबीन–26, जवाहर सोयाबीन 20–116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.–2, जे.एस.–93–5, जे.एस.–72–44, जे.एस.–75–46, पूसा–20, जे.एस.–335, एम.ए.यू.एस.–47, एन.आर.सी.–37 तथा तराई एवं भाभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.–262 की बुवाई करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम एवं एक ग्रा. कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण के मिश्रण से शोधित करें अथवा कार्बेन्डाजिम 2 ग्रा./कि.ग्रा. की दर से उपचारित करें। बुआई से पहले बीज को सोयाबीन के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

<u>मूॅगफली की खेती</u>

- मूॅगफली की कम अवधि वाली प्रजातियों चन्द्रा उपरहार, उत्कर्ष, एम–13, अम्बर, चित्रा (एम.ए.10), कौशल (जी.201), टी.जी. 37ए, प्रकाश (CSMC-884) जी.जे.जी.–31, जी.जे.जी.–9, सेन्ट्रल ग्राउंडनट की बुवाई करें। देर से बुआई करने पर फसल में बडनिक्रोसिस बीमारी लगने की संभावना ज्यादा होती है।
- बुवाई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व बीज को थीरम 2 ग्रा. + 1 ग्रा. कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें अथवा ट्राइकोडर्मा 4 ग्रा. एवं 1 ग्रा. कार्बाक्सिन प्रति कि. ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। इस शोधन के 5–6 घंटे बाद बोने से पहले बीज को मूंगफली के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

<u>तिल की खेती</u>

- तिल की उन्नत किस्मों यथा गुजरात तिल–6, आर.टी.–346, आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर, टा–78, टा–13, टा–12 तथा टा–4 बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।

<u>लोबिया की खेती</u>

- लोबिया की उन्नतशील किस्मों यथा पंत लोबिया–5, पंत लोबिया–3, पंत लोबिया–4, आर–101, जी.सी.–3 तथा आर–9 की बुवाई करें।

<u>गन्ना की खेती</u>

- शरदकालीन गन्ने में मिट्टी चढ़ायें।
- यदि गन्ने की लंबाई पांच फुट हो गई हो तो ढ़ाई फुट की ऊॅचाई पर प्रथम बॅधाई करें। प्रथम बॅधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बॅधाई करें।
- बसंतकालीन गन्ने में तीव्र वृद्धि हेतु नैनो यूरिया 2.5 मि.ली. एवं नैनो डी.ए.पी. 2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से खेत में नमी की दशा में गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत के घोल से पौधों को नहला दें।
- गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप देखा जा रहा है इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे है तो खेत में नमी बनाये रखे तथा कीटनाशक का छिड़काव न करें अन्यथा की स्थिति में इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति. ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत+साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

<u>सब्जियों की खेती</u>

- फूल गोभी की मध्यकालीन किस्मों पूसा सिंथेटिक, सोनाली–45, मेघा आदि की नर्सरी में बुवाई करें।
- भिण्डी की बुवाई पूर्ण करें।

- खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने के लिए पौधशाला मे खरीफ प्याज की बुआई करायें, एक हे0 प्याज फसल के लिए 8–10 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है।
- सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5–6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- लोबिया की बुवाई करें। 15–20 किग्रा. बीज प्रति हे0 की दर पर्याप्त होती है। बुआई करने से पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचार करके बुआई करें।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा 1 मीटर चौड़ा और 10–15 सेन्टी0 ऊंचा स्थान बनाना चाहिए।
- बोई गई फसलों में समय–समय पर निराई एवं गुड़ाई करते रहें।

<u>बागवानी</u>

- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की उचांई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5ः प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहना चाहिए।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु ऊतक संवर्धित रोगरोधी जी–9 प्रजाति लगाये।

<u>पशुपालन</u>

- पंडित दीन दयाल उपाध्याय योजना के अन्तर्गत मण्डल/जिला स्तर पर पशु आरोग्य मेलों का आयोजन किया जा रहा है,य इन मेलों में निःशुल्क चिकित्सा, दवापान, बधियाकरण, टीकाकरण, लघु शल्य चिकित्सा, आल्ट्रासाउण्ड मशीन द्वारा गर्भ परीक्षण, पशु धन बीमा तथा पशुपालन कार्य हेतु इच्छुक पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड के अन्तर्गत पशुपालन घटक के अधीन ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही साथ गोष्ठियों का आयोजन भी सम्पादित किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय पशु चिकित्सा अधिकारी या निकटतस्थ पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते है।
- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- घोंघेयुक्त तालाबों के आस–पास पशुओं को न चरायें।
- वर्तमान मौसम में पशुओं को गड्ढ़ों में भरे गंदे पानी को पीने से बचायें।
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- वर्तमान समय में खरीफ चारा फसलों यथा ज्वार, बाजरा, लोबिया, मक्का आदि की बुवाई समय से करें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

<u>मत्स्य पालन</u>

- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन करायें।
- वर्तमान मौसम में वर्षा का मौसम एवं आद्रता अधिक होने के कारण तालाब के पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा काफी कम हो जाने की संभावना बनी रहती है, जिससे मछली तालाब के ऊपरी

सतह पर आकर मरने लगती है। इसके बचाव के लिए शाम एवं सवेरे 4–4 घंटा एयरेटर या पंप से पानी को चलाएँ अथवा ऑक्सीजन बढ़ाने वाली दवा यथा आटूमैक्स या एडऑक्सी या ऑक्सीग्रो का प्रयोग 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से सुखा छिड़काव करें।

- माह में एक बार जैविक खाद के रूप में गोबर 400 कि.ग्रा. प्रति एकड़ या सरसों/राई की खली 100 कि. ग्रा./एकड़ एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट 15–20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के बीच का अन्तराल कम से कम 15 दिन होना चाहिए।
- मत्स्य बीज परिवहन दिन के कम तापमान वाले समय में करें।
- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000–4000 प्रति एकड़ की दर से शुरू कर दें।
- ब्रूडर तालाब में पूरक आहार का प्रयोग मछली के कुल शरीर भार का 2 से 3 प्रतिशत की दर से करें।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने हैचरी से रोहु, कतला, मृगल, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प एवं सिल्वर कार्प को स्पॉन का उत्पादन गहन प्रबंधन से करना चालू रखें।
- नर्सरी तालाब में स्पॉन डालने के 15 दिनों के बाद ही रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करें।
- मत्स्य पालक किसान बन्धु अपने तालाब में फिंगरलिंग 6,000–8,000 प्रति एकड़ या ईयरलिंग 2,000–4,000 प्रति एकड़ की दर से अपने तालाब में डालकर पालन सुनिश्चित करें।
- तालाब में चूने का प्रयोग 15 दिनों के अन्तराल पर पी.एच. मान के अनुसार 10–15 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से करें।

<u>वानिकी</u>

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियॉ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।
- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

<u>रेशम</u>

- टसर रेशम कीटपालन 15 जुलाई से प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु समस्त कार्यवाही यथा विशुद्धीकरण आदि कार्य पूर्ण कर लिये जाय।
- उपरोक्त के दृष्टिगत कृषक/कीटपालक ई–डिस्ट्रिक विभागीय यू.आर.एल. ***http://sericulture.eservicesup.in*** पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाण्ड मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये नीचे दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें।
- मानसून सत्र का वृक्षारोपण जारी रखें तथा पौध रोपण के पश्चात् चारों तरफ की मिट्टी को दबा दें। नये पौध रोपण करते समय पौधों से 90 प्रतिशत पत्ती हटा दें।
- टसर कीटपालक अर्जुन, आसन पौधों के नीचे भूमि पर 1 भाग ब्लीचिंग पाउडर व 9 भाग चूना मिला पाउडर का छिड़काव उद्यानों में कर लें।

<u>राज्य आपदा प्रबंधन</u>

- वर्तमान मौसम में सर्पदंश की घटनायें होती है अतः सर्पदंश से बचाव हेतु वीडियो लिंक– <u>https://www.youtube.com/watch?v=GWOgmHv0CTk&t=1s</u> में दिर्शाये गये निर्देशों का पालन करें।
- वज्रपात की स्थिति में बचाव हेतु वीडियो लिंक <u>https://www.youtube.com/watch?v=E1rOXSMW6s8</u> में दिर्शाये गये निर्देशों का पालन करें।
- भारत सरकार तथा राज्य सरकार अधिसूचित आपदाओं के सापेक्ष मृत्यु होने की स्थिति में पीड़ित परिवारों को धनराशि रू. 4,00,000.00 लाख की अहैतुक सहायता प्रदान की जाती है।
- किसान भाई मौसम संबंधी चेतावनियों की जानकारी हेतु सचेत ऐप को उपलब्ध लिंक– <u>(https://play.google.com/store/apps/details?id=com.cdotindia.capsachet&pli=1)</u> से डाउनलोड करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 17 जुलाई, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।
नोटः—

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(राजर्षि कुमार गौड़)
उप महानिदेशक (आर.पी.एम.सी.)

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।

27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की दसवीं बैठक दिनांक 11 जुलाई, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ।
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
4. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
5. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (ऑनलाइन)।
6. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
7. डा. आशाराम सिरवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएफआरआई, झांसी (ऑनलाइन)।
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
9. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
10. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
12. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ (ऑनलाइन)।
13. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
14. श्री नीरेन्द्र कमार, सहायक निदेशक, रेशम, उत्तर प्रदेश।
15. श्री डी.पी. सिंह , प्रदर्शक रेशम उत्पादन, रेशम, उत्तर प्रदेश।
16. श्री नपेन्द्र सिंह, चारा सहायक, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
17. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
18. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।